ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.3382245

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Social

छत्तीसगढ़ी साहित्य का इतिहास : एक परिचय

योगेश कुमार साहू [1]
[1] शोधार्थी – साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

मुख्य शब्द – छत्तीसगढ़ी, साहित्य का इतिहास, लोक–साहित्य

Cite This Article: योगेश कुमार साहू. (2019). "छत्तीसगढ़ी साहित्य का इतिहास : एक परिचय." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 7(8), 339-341. https://doi.org/10.5281/zenodo.3382245.

छत्तीसगढ़ की अपनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है, जिसमें छत्तीसगढ़ी साहित्य को सौ वर्षों तक सीमित कर दिया गया है। छत्तीसगढ़ी लोक–साहित्य का विकास छत्तीसगढ़ी लोक की मान्यताओं, संस्कृति तथा उसकी सभ्यताओं से निर्मित हुआ है। छत्तीसगढ़ी भाषा में रचित साहित्यिक रचनाओं का आरंभ लगभग एक हजार वर्ष पूर्व हो चुका था, लेकिन उस समय पर्याप्त मात्रा में साहित्य–सृजन नहीं हुआ था फिर भी छत्तीागढ़ी साहित्यिक–यात्रा विभिन्न कालों में रचित साहित्यिक रचनाएँ उपलब्ध हैं। ''इस एक हजार वर्षों के साहित्यिक यात्रा को विभिन्न युगों के आधार पर तीन वर्गों में विभाजित किया गया है[1] :–

1. गाथा युग : 1000 से 1500 ई. तक
2. भक्ति युग : 1500 से 1900 ई. तक
3. आधुनिक युग : सन् 1900 से आज तक

इस प्रकार छत्तीसगढ़ी साहित्यिक यात्रा को इन नामों से संबोधित किया गया है तथा इसे क्रमानुसार आदिकाल, मध्यकाल तथा आधुनिक काल के रूप में भी जाना जाता है। इन विभिन्न युगों में रचित साहित्य का उल्लेख कालक्रम के अनुसार–

1. गाथा युग (आदिकाल)

गाथा युग का कालक्रम 1000 से 1500 ई. तक माना गया है। इस समय छत्तीसगढ़ी में अनेक गाथाओं की रचना हुई, लेकिन ये रचनाएँ लिपिबद्ध नहीं हैं। ये केवल मौखिक हैं और यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक मौखिक रूप से अभिरक्षित होते आए हैं। इस समय की रचनाएँ मुख्य रूप से प्रेम और वीरता पर आधारित है। वर्तमान में इन रचनाओं को लिपिबद्ध किया गया है। इन रचनाओं को दो वर्गों में विभाजित किया गया है–

- **प्रेम प्रधान गाथाएँ**

छत्तीसगढ़ की प्राचीन प्रेम प्रधान गाथाओं में 'अहिमन रानी', 'केवला रानी', 'रेवा रानी' नारी प्रधन लोक–गाथाएँ हैं, तथापि इनका मूल अंश बहुत अल्प मात्रा में दिया गया है। लोक–गाथाकार इन गाथाओं को तीन से पाँच दिनों में सुनाकर पूर्ण करते हैं। यह गाथाकाल हिंदी के गाथा युग की रचनाओं का स्मरण करा देता है। इसकी कथन–शैली सजीवपूर्ण पृष्ठभूमि का भाव जागृत कराते हैं। वे लोक–कंठ से निःसृत हुए और लोक–कंठ

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.3382245

में समा गए। नंद किशोर तिवारी ने अपनी रचना 'छत्तीसगढ़ी साहित्य दशा और दिशा' में इसका विवेचन किया है। हमें शिष्ट–साहित्य और लोक–साहित्य उनकी मर्यादा और परंपरा को समझना चाहिए।

- **धार्मिक और पौराणिक गाथाएँ**

गाथा युग के धार्मिक और पौराणिक गाथा में 'फूलबासन' और 'पंडवानी' प्रमुख हैं। 'फूलबासन' में रामायण से संबंधित कथा है, जिसमें सीता और लक्ष्मण की कथा है। इसके अंतर्गत सीता लक्ष्मण से स्वप्न में देखे गए 'फूलबासन' नामक फूल लाने का अनुरोध करती है। 'छत्तीसगढ़ी भाषा और साहित्य' में डॉ. सत्यभामा आड़िल लिखती हैं कि ''भ्रमणशील जोगी फूलबासन थी राजा सालकेवरा की सबसे छोटी बेटी। राजा सालकेवरा थे भावरागढ़ के राजा, उनकी सात बेटियाँ एक बार सरोवर में नहाने जाती हैं। सभी बेटियाँ किनारे में नहाती हैं, पर फूलबासन सरोवर के बीच जाना चाहती थी। आधी रात को फूलबासन सरोवर में जाती है और फिर फूल बन जाती है। 'पंडवानी' में महाभारत के बारे में वर्णन है, जिसमें पांडवों की कथा को लोक–जीवन के साथ बड़े सुंदर रूप से प्रस्तुत किया गया है। इसमें नायक भीम को माना जाता है। इस तरह से यह गाथाओं की परंपरा भक्तियुग में भी विद्यमान है।''[2]

2. भक्तियुग (मध्यकाल)

भक्तिकाल का समय 1500 से 1900 ई. तक माना जाता है। इस युग में छत्तीसगढ़ पर बाहरी आक्रमणकारियों ने आक्रमण किया, जिससे राजनैतिक उलट–फेर और अशांति का युग बना रहा और रचनाओं में भी मुसलमानों का प्रभाव दिखने लगा। डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा ने 'छत्तीसगढ़ी भाशा का उद्विकास' में भक्तियुग को तीन धाराओं में विभाजित किया है[3] :–

- **मध्ययुग की वीरगाथाएँ**

इस युग की वीर–गाथाओं में 'फूलकुँवर', 'देवीगाथा' और 'कल्याणसाय की गाथाएँ' प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त कलचुरी वंश में 'गोपल्लागीत', 'ढोलामारू', 'नगेसर कइना' तथा 'रायसिंघ के पवारा' के नाम लघुकथा के रूप में प्रसिद्ध हैं। इसी वीा–गाथा की शैली के समान ही 'लोरिकचंदा', 'सरबन गीत' और 'बोधरू गीत' भी है। 'फूलकुँवर की गाथा' में वीरांगना फूलकुँवर के द्वारा मुसलमानों से लोहा लेने की घटना का चित्रण किया गया है, जिसकी तुलना झाँसी की रानी से किया जाता है।

- **धार्मिक एवं सामाजिक गीतधारा**

इस समय छत्तीसगढ़ अंचल कबीरदास जी से प्रभावित था। इस समय कबीर–पंथ तथा सतनाम–पंथ बहुत ही प्रसिद्ध थे। कबीर–पंथ के शिष्य धनी धरमदास ने छत्तीसगढ़ में कबीर–पंथ की शाखा स्थापित की, जिसके कारण छत्तीसगढ़ में कबीर–पंथियों की संख्या बढ़ने लगी। इसी माध्यम से छत्तीसगढ़ी साहित्य का प्रथम लिपिबद्ध स्वरूप प्राप्त करते हैं।

संत धरमदास उच्च कोटी के काव्यात्मक रचनाएँ किए, जिनमें गीत–साहित्य अधिक हैं। सतनाम–पंथ के संस्थापक महान् संत गुरु घासीदास थे। सतनाम–पंथ की रचनाँ 'चल हंसा अमर लोक जइबो' मायावी संसार की स्वार्थपरता को स्पष्ट करते हुए ईश्वर के नाम को षांति के क्रोड़ के रूप में चित्रित किया है।[4]

- **स्फूट रचनाएँ**

भक्ति–युग में स्फूट रचनाएँ भी हुई हैं। इस युग के कवियों में गोपाल, माखन, रेवाराम, लक्ष्मण तथा प्रहलाद दुबे का नाम उल्लेखनीय है।[5] गोपाल कवि रतनपुर के निवासी थे। इनकी रचनाएँ 'जैमिनी अश्वमेघ', 'सुदामा चरित', 'भक्त चिंतामणि', 'छंदविलास' नामक रचनाओं का उल्लेख मिलता है। बाबू रेवाराम की दस से अधिक रचनाएँ हैं। लक्ष्मण कवि ने 'भोषला वंश प्रशस्ति' की रचना की। प्रहलाद दुबे ने 'जयचन्द्रिका' नामक प्रसिद्ध रचना की।

3. आधुनिक युग

आधुनिक युग का समय 1900 से अब तक का है। इस युग में सबसे अधिक लिपिबद्ध रचना उपलब्ध है। छत्तीसगढ़ी साहित्य के सभ्झी विधाओं पर रचना की गई है। इसका प्रारंभ पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय ने किया

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.3382245

तथा ठेठ छत्तीसगढ़ी में काव्य का सृजन पं. सुंदरलाल शर्मा ने किया। नंद किशोर तिवारी के अनुसार 1915 में पं. सुंदरलाल शर्मा ने कुछ कविताएँ लिखीं। उनके द्वारा रचित 'छत्तीसगढ़ी दानलीला' के चार संस्करण प्रकाशित हुए, जो दाहा–चौपाई में रचित हैं। इनमें भगवान श्रीकृष्ण और गोपियों के मधुर प्रेम को सुंदर रूप में प्रस्तुत किया गया है। शर्मा जी ने 'छत्तीसगढ़ी रामायण' की भी रचना की है। इसके पश्चात् जगन्नाथ प्रसाद 'भानु', कपिलनाथ मिश्र और शुकलाल प्रसाद पाण्डेय का नाम विशेष रूप से प्रसिद्ध है।

इस समय छत्तीसगढ़ में कविताओं की रचना सबसे अधिक हुई। अन्य विधाओं की अपेक्षा इसी क्रम में कुंजबिहारी चौबे, गिरिवर दास वैष्णव, पुरुषोत्तम लाल, गया प्रसाद बसेढ़िया, गोविंद राव विट्ठल, कुंवर दलपत सिंह, और किशनलाल ढोटे का नाम उल्लेखनीय है। गोविंदराव विट्ठल ने सन् 1924 में 'छत्तीसगढ़ी दानलीला' के आधार पर 'छत्तीसगढ़ी नागलीला' की रचना की। इस काल के अन्य कवि प्यारेलाल गुप्त, कोदूराम दलित, द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' की रचनाएँ बहुत ही प्रसिद्ध हैं। श्यामलाल चतुर्वेदी ने छत्तीसगढ़ी साहित्य को और समृद्ध किया, जिसमें उन्होंने छत्तीसगढ़ी में 'राम वनवास', 'बेटी की विदा' काव्य रचना की। छत्तीसगढ़ी काव्य के विकास–क्रम में मासिक पत्रिका का महत्वपूर्ण योगदान था। उस समय के कवि लखन लाल गुप्त, नारायण लाल परमार, दानेश्वर शर्मा, हरि ठाकुर, नरेन्द्र देव वर्मा, केयूर भूषण, टिकेन्द्र टिकरिहा आदि कवियों ने गीतों और कविताओं की रचना की।

इन कवियों के अतिरिक्त छत्तीसगढ़ में कुछ अन्य सुकवि भी हैं, जिनका उल्लेख प्रशंसनीय है, इनमें जमुना प्रसाद यादव, हेमनाथ यदु, विद्या भूषण मिश्र, पवन दीवान, बसंत दीवान, रविशंकर शुक्ल, सूरज बली शर्मा, भगवती लाल सेन, उदय कुमार 'कमल', रघुवीर अग्रवाल 'पथिक', चतुर्भुज, साहूराम तिलवार तथा लक्ष्मण मस्तूरिया का नाम उल्लेखनीय है।

छत्तीसगढ़ी साहित्य के विकास–यात्रा को इस लेख में पद्य–रचनाओं के क्रम तक सीमित रखा गया है। ''छत्तीसगढ़ी कविता ने छत्तीसगढ़ी कविता की परंपरागत रूढ़ियों, अभिप्रायों का निषेध नहीं किया है। उन रूढ़ियों, अभिप्रायों का अनुगमन करती हुई छत्तीसगढ़ी कविता अभिव्यक्ति के नए शिल्प और मुहावरों की तलाश भी कर रही है।''[6]

संदर्भ–सूची

[1] वर्मा, नरेन्द्र देव. छत्तीसगढ़ी भाषा का उद्विकास. रायपुर : छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2009; पृ 98.
[2] आड़िल, सत्यभामा. छत्तीसगढ़ी भाषा और साहित्य.
[3] वर्मा, नरेन्द्र देव. छत्तीसगढ़ी भाषा का उद्विकास. रायपुर : छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2009; पृ 99.
[4] तिवारी, नंदकिशोर. छत्तीसगढ़ी साहित्य दशा और दिशा. रायपुर : वैभव प्रकाशन, 2006; पृ. 8.
[5] वर्मा, नरेन्द्र देव. छत्तीसगढ़ी भाषा का उद्विकास. रायपुर : छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2009; पृ 100.
[6] तिवारी, नंदकिशोर. छत्तीसगढ़ी साहित्य दशा और दिशा. रायपुर : वैभव प्रकाशन, 2006; पृ. 71.
[7] पाठक, विमल कुमार. छत्तीसगढ़ी साहित्य का इतिहास.
[8] गुप्त, प्यारेलाल. प्राचीन छत्तीसगढ़. रायपुर : छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी

*Corresponding author.
E-mail address: yoge975453@ gmail.com